e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2320-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 3, March 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.512

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 3, March 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1003207

राजस्थान में कलात्मक बावड़ियाँ: जल, कला व स्थापत्य के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में

डॉ. पंकज गौर

सहायक आचार्य, इतिहास, राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर

सार

बावड़ी या बावली उन सीढ़ीदार कुँओं , तालाबों या कुण्डो को कहते हैं जिन के जल तक सीढ़ियों के सहारे आसानी से पहुँचा जा सकता है। भारत में बावड़ियों के निर्माण और उपयोग का लम्बा इतिहास है। कन्नड़ में बावड़ियों को 'कल्याणी' या पुष्करणी, मराठी में 'बारव' तथा गुजराती में 'वाव' कहते हैं। संस्कृत के प्राचीन साहित्य में इसके कई नाम हैं, एक नाम है-वापी। इनका एक प्राचीन नाम 'दीर्घा' भी था- जो बाद में 'गैलरी' के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। वापिका, कर्कन्धु, शकन्धु आदि भी इसी के संस्कृत नाम हैं।जल प्रबन्धन की परम्परा प्राचीन काल से हैं। हड़प्पा नगर में खुदाई के दौरान जल संचयन प्रबन्धन व्यवस्था होने की जानकारी मिलती है। प्राचीन अभिलेखों में भी जल प्रबन्धन का पता चलता है। पूर्व मध्यकाल और मध्यकाल में भी जल सरंक्षण परम्परा विकसित थी। पौराणिक ग्रन्थों में तथा जैन बौद्ध साहित्य में नहरों, तालाबों, बाधों, कुओं बावडियों और झीलों का विवरण मिलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में जल प्रबन्धन का उल्लेख मिलता है। चन्द्रगुप्त मौर्य के जूनागढ़ अभिलेख में सुदर्शन झील और कुछ वापियों के निर्माण का विवरण प्राप्त है। इस तरह भारत में जल संसाधन की उपलब्धता एवं प्राप्ति की दृष्टि से काफी विषमताएँ मिलती हैं, अतः जल संसाधन की उपलब्धता के अनुसार ही जल संसाधन की प्रणालियाँ विकसित होती हैं। बावड़ियां हमारी प्राचीन जल संरक्षण प्रणाली का आधार रही हैं- प्राचीन काल, पूर्वमध्यकाल एवं मध्यकाल सभी में बावड़ियों के बनाये जाने की जानकारी मिलती है। दूर से देखने पर ये तलघर के रूप में बनी किसी बहुमंजिला हवेली जैसी दृष्टिगत होती हैं।बावड़ी को अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है इसे स्टेपवेल, बओरी, बाओली, बावरी भी कहा जाता है इसको मराठी में बारव और गुजराती में वाव कहते हैं कन्नड़ में इसे कल्याणी कहते है।

परिचय

बावड़ी वास्तव में एक जल प्रबंधन की प्राचीन परंपरा है प्राचीन काल में यह पानी का बहुत बड़ा स्त्रोत्र हुआ करती थी बावड़ी को इस तरीके से बनाया जाता था कि ये जल संसाधन के साथ-साथ एक स्थापत्य कला की भी संरचना हुआ करती थी यह बावरिया एक समुदायिक संभावना का भी मुख्य स्थान हुआ करते थी सबसे पहले बावरी का उल्लेख गुजरात और राजस्थान में मिलता है।[1,2]

बावड़ियों को सर्वप्रथम हिन्दुओं द्वारा (जनोपयोगी शिल्पकला के रूप में) विकसित किया गया और उसके पश्चात मुस्लिम शासकों ने भी इसे अपनाया।[1] बावड़ी-निर्माण की परम्परा कम से कम छठी शताब्दी में गुजरात के दक्षिण-पश्चिमी भाग में आरम्भ हो चुकी थी। धीरे-धीरे ऐसे कई निर्माण-कार्य उत्तर की ओर विस्तार करते हुए राजस्थान में बढ़े। अपनी पुस्तक 'राजस्थान की रजत बूँदें' में अनुपम मिश्र ने राजस्थान की बावड़ियों के इतिहास, शिल्प-पक्ष और इनकी सामाजिक-उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डाला है। बावड़ी-निर्माण का यह कार्य ११वीं से १६वीं शताब्दी में अपने पूर्ण चरम पर रहा।[1]

बावडियों के परिसर में तरह तरह की तिबारियां, अलग अलग आकर प्रकार के कमरे, संपर्क-दालान, दीर्घाएं, मंदिर आदि अनेक प्रकार के निर्माण किये जाते थे क्यों कि बावड़ी केवल जल के उपयोग की चीज़ नहीं सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का लगभग केंद्र भी होती थी, यहाँ पूजा-अर्चना भी की जा सकती थी, ब्याह-शादी और गोठ-ज्योनार (आज जिसे पिकनिक कहते हैं) भी | दूर से आने वाले यात्री यहाँ बनी धर्मशालाओं में रुक सकते थे।

वास्तुशास्त्र के अनुसार बावड़ियां चतुष्टकोणीय, वर्तुल, गोल या दीर्घ प्रकारों की हो सकती हैं। इनके प्रवेश से मध्य भाग तक ईटों अथवा पत्थरों से पक्का और ठोस निर्माण होता है जिसके ठीक नीचे जल होता है जो प्रायः किसी भूगर्भीय निरंतर प्रवाहित जलस्रोत से जुड़ा होता है। आंगन से प्रथम तल तक सीढ़ियों, स्तंभों, छतरियों तथा मेहराबों आदि का निर्माण होता है। एक या अधिक मंजिल में निर्मित बावड़ियों में अनेकानेक दरवाजे, सीढ़ियाँ, दीवारें तथा आलिए आदि बने होते हैं जिनमें बेलबूटों, झरोखों, मेहराब एवं जल देवताओं का अंकन होता है। जल देवताओं में अधिकांशत कश्यप, मकर, भूदेवी, वराड़, गंगा, विष्णु और दशावतार आदि का चित्रण किया जाता है। पर इन पर उत्कीर्ण कई स्थानीय देवी देवता भी देखे जाते हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 3, March 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1003207

भांडारेज की बावड़ी (दौसा)राज. जी हाँ दौसा की चाँद बावड़ी की तरह ये बावड़ी भी कहते है कि एक रात में ही बनी थी। इतना ही नहीं ये भी कहते है कि चाँद बावड़ी , आलूदा की बावड़ी और भांडारेज की बावड़ी तीनो को ही एक रात में बनाया गया और ये तीनो सुरंग से एक-दूसरे से जुड़ी हैं।[3,4]

अवलोकन

कला, संस्कृति, इतिहास एवं पर्यटन क्षेत्रों की बात की जाये, तो भारत भूमि का मुकाबला तो दूर, कोई आस-पास भी खडा हुआ नजर नहीं आता। 'अतिथि देवो भवः' सभ्यता वाले हमारे देश में कदम-कदम पर ऐतिहासिक स्थल, विजय स्तम्भ, महल, मीनारें, बावडियाँ, हर स्थल से जुडी पौराणिक गाथा, हर एक स्थान का धार्मिक महत्त्व आदि देखने या सुनने में आता है। इन स्थानों पर लोगों को धर्म से जोडने के लिए अनेकों राजाओं ने मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारे एवं अन्य धार्मिक स्थान बनाये हैं। इन धार्मिक-ऐतिहासिक स्थानों की उपस्थिति को अपने मन में बिठाकर लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं एवं अपने बच्चों को भी इसी तरह की शिक्षा देते हैं।

चाँद बावडी

जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग (NH-21) पर स्थित दौसा जिले का ह्रदय कहे जाने वाले सिकंदरा कस्बे से उत्तर की ओर कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, आभानेरी गाँव। पुरातत्व विभाग को प्राप्त अवशेषों से ज्ञात जानकारी के अनुसार आभानेरी गाँव 3000 वर्ष से भी अधिक पुराना हो सकता है, इसी गाँव में स्थित है "चाँद बावडी"। आभानेरी गाँव का शुरूआती नाम "आभा नगरी" था (जिसका मतलब होता है चमकदार नगर), लेकिन कालान्तर में इसका नाम परिवर्तित कर आभानेरी कर दिया गया।

9वीं शताब्दी में निर्मित इस बावडी का निर्माण राजा मिहिर भोज (जिन्हें कि चाँद नाम से भी जाना जाता था) ने करवाया था, और उन्हीं के नाम पर इस बावडी का नाम चाँद बावडी पडा।

दुनिया की सबसे गहरी यह बावडी चारों ओर से लगभग 35 मीटर चौडी है तथा इस बावडी में ऊपर से नीचे तक पक्की सीढियाँ बनी हुई हैं, जिससे पानी का स्तर चाहे कितना ही हो, आसानी से भरा जा सकता है। 13 मंजिला यह बावडी 100 फ़ीट से भी ज्यादा गहरी है, जिसमें भूलभुलैया के रूप में 3500 सीढियाँ (अनुमानित) हैं। इसके ठीक सामने प्रसिद्ध हर्षद माता का मंदिर है। बावडी निर्माण से सम्बंधित कुछ किवदंतियाँ भी प्रचलित हैं जैसे कि इस बावडी का निर्माण भूत-प्रेतों द्वारा किया गया और इसे इतना गहरा इसलिए बनाया गया कि इसमें यदि कोई वस्तु गिर भी जाये, तो उसे वापस पाना असम्भव है।

चाँदनी रात में एकदम दूधिया सफ़ेद रंग की तरह दिखाई देने वाली यह बावडी अँधेरे-उजाले की बावडी नाम से भी प्रसिद्ध है। तीन मंजिला इस बावडी में नृत्य कक्ष व गुप्त सुरंग बनी हुई है, साथ ही इसके ऊपरी भाग में बना हुआ परवर्ती कालीन मंडप इस बावडी के काफ़ी समय तक उपयोग में लिए जाने के प्रमाण देता है। इसकी तह तक जाने के लिए 13 सोपान तथा लगभग 1300 सीढियाँ बनाई गई हैं, जो कि कला का अप्रतिम उदाहरण पेश करती हैं। स्तम्भयुक्त बरामदों से घिरी हुई यह बावडी चारों ओर से वर्गाकार है। इसकी सबसे निचली मंजिल पर बने दो ताखों पर महिसासुर मर्दिनी एवं गणेश जी की सुंदर मूर्तियाँ भी इसे खास बनाती हैं। बावडी की सुरंग के बारे में भी ऐसा सुनने में आता है कि इसका उपयोग युद्ध या अन्य आपातकालीन परिस्थितियों के समय राजा या सैनिकों द्वारा किया जाता था। लगभग पाँच-छह वर्ष पूर्व हुई बावडी की खुदाई एवं जीर्णोद्धार में भी एक शिलालेख मिला है जिसमें कि राजा चाँद का उल्लेख मिलता है। चाँद बावडी एवं हर्षद माता मंदिर दोनों की ही खास बात यह है कि इनके निर्माण में प्रयुक्त पत्थरों पर शानदार नक्काशी की गई है, साथ ही इनकी दीवारों पर हिंदू धर्म के सभी 33 करोड देवी-देवताओं के चित्र भी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 3, March 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1003207

उकेरे गये हैं। बावडी की सीढियों को आकर्षक एवं कलात्मक तरीके से बनाया गया है और यही इसकी खासियत भी है कि बावडी में नीचे उतरने वाला व्यक्ति वापस उसी सीढी से ऊपर नहीं चढ सकता। आभानेरी गुप्त युग के बाद तथा आरम्भिक मध्यकाल के स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है जिसके भग्नावशेष विदेशी आक्रमण के हमले में खण्डित होकर इधर-उधर फ़ैले हुए हैं।[5,6]

रानी जी की बावड़ी (सीढ़ीदार कुआं) का निर्माण 1699 में रानी नाथावती द्वारा करवाया गया था जो राव की सबसे कम उम्र की रानी थी।

नीमराणा के अंदर स्थित **नीमराणा की बावड़ी** बहुत पुरानी और शानदार बहु-मंजिला संरचना है। यह बावड़ी नीमराना के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है।

यह बावड़ी नीमराना महल के नजदीक स्थित है जिसमे 170 चरण हैं, और जैसे-जैसे हम नीचे जाते हैं निर्माण छोटा होता जाता है। **नीमराना बावड़ी** पुरानी वास्तुकला की सुंदरता को दर्शाता है। जिसमे पुराने निर्माण कला की उत्कृष्टता देखी जा सकती है। नीमराणा की बावड़ी 9 मंजिला ईमारत थी और प्रत्येक मंजिल की ऊँचाई लगभग 20 फीट है। यह अंदर से ठंडा और नम है।यह बावड़ी पानी और सिंचाई दोनों के लिए उपयोग के साथ साथ आकर्षक पर्यटक स्थल भी बना हुआ है जहा पर्यटकों की काफी भीड़ देखी जाती है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 3, March 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1003207

पन्ना मीना के कुंड की गहराई 200 फीट है. 8 मंजिला इस बावड़ी में करीब 1800 सीढ़िया हैं. इस कुंड में कालीन कारिगरी का खूबसूरत नमूना देखने को मिलता है. यहां की सुंदरता पर्यटकों का मन मोह लेती है। राजस्थान की लोकप्रिय बावड़ियों में से एक 'पन्ना मीना का कुंड' की खूबसूरती और वास्तुकला को देखने के लिए दूर-दूर से लोग यहां पर आता हैं. चौकोर आकार के इस कुंड में चारों तरफ सीढ़ियां हैं. यह कुंड न केवल इतिहास प्रेमियों बल्कि आज की युवा पीढ़ी के बीच भी बेहद पॉपुलर है. आमेर किले के पास स्थित 'पन्ना मीना का कुंड' करीब 200 फीट गहरा है. पहले यह कुंड लोगों के लिए पानी का मुख्य स्त्रोत हुआ करता था. हालांकि, अब यह लोगों का पसंदीदा पिकनिक स्पॉट बन गया है.[7,8]

पन्ना मीना के कुंड को लेकर कई कथाएं प्रचलित हैं. उनमें से ही एक है कि इस बावड़ी का निर्माण करीब एक हजार साल पहले मीणा राजवंश के लोगों ने करवाया था. पन्ना मीणा एक महान योद्धा थे, उन्हें आमेर के राजा ने धोखे से मारकर यहां पर अपना राज स्थापित किया था. यह बावड़ी पन्ना मीणा के पतन की कहानी भी बयां करती है.

हादी रानी की बावड़ी हादी रानी को उनके महान चरित्र के लिए जाना जाता है। वह हाडा राजपूत की बेटी थी और उसकी शादी मेवाड़ के सलूंबर के एक सरदार चुंडावत से हुई थी। हादी रानी ने अपने पति को युद्ध में जाने के लिए प्रेरित करने के लिए ही अपने जीवन का बलिदान दिया। वर्ष 1653-1680 में मेवाड़ के महाराजा और औरंगजेब के बीच युद्ध हुआ था। [9,10]

मेवाड़ के महाराजा ने अपने पति को युद्ध के लिए बुलाया। लेकिन सरदार युद्ध में जाने से हिचकिचाते थे क्योंकि उनकी शादी कुछ दिन पहले ही हुई थी। हालाँकि, एक राजपूत होने के नाते और राजपूत सम्मान की रक्षा के लिए उन्हें युद्ध में शामिल होना पड़ा और उन्होंने हादी रानी से उन्हें युद्ध के मैदान में ले जाने के लिए कुछ स्मृति चिन्ह देने के लिए कहा। हादी रानी ने सोचा कि वह मेवाड़ के राजपूत होने के अपने कर्तव्य को पूरा करने में उनके पति के लिए एक बाधा थी। इसलिए, अपने पति को युद्ध में जाने और मेवाड़ की रक्षा के लिए प्रेरित करने के लिए, उसने अपना सिर काटकर अपने पति को सौंपने का आदेश दिया। अपनी प्यारी हादी रानी का सिर देखकर सरदार चकनाचूर हो गया, लेकिन फिर उसके सिर को एक स्मृति चिन्ह के रूप में अपने बालों से उसके गले में बांध दिया। उसने युद्ध के मैदान में बहादुरी से लड़ाई लड़ी और औरंगजेब की सेना को चलाने के लिए बनाया लेकिन जीत के बाद भी उसने युद्ध के मैदान से जाने से इनकार कर दिया और उसने अपनी गर्दन भी काट ली क्योंकि वह अब और नहीं रहना चाहता था।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 3, March 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1003207

हादी रानी ने अपने डगमगाते पति को युद्ध के मैदान में जाकर अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए प्रेरित किया और मेवाड़ को अपने पति के लिए एक उपहार के रूप में अपना सिर बलिदान कर दिया। बहादुर हादी रानी को सम्मान देने के लिए टोंक जिले के टोडा राय सिंह में उनके नाम पर बावड़ी बनाई गई है। बावड़ी को बावड़ी या बावड़ी या वाव भी कहा जाता है।[11,12]

रंगमहल, सूरतगढ़ की बावड़ी

रंगमहल किसी जमाने में यौधेय गणराज्य की राजधानी हुआ करता था. रंगमहल पर कब्जा करने के लिए सिकंदर ने भी आक्रमण किया था. लेकिन हूणों की चढ़ाई के बाद रंगमहल पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया. पुरातत्व खुदाई के दौरान यहां से एक प्राचीन बावड़ी प्राप्त हुई है, जिसकी में 2 फुट लंबी और 2 फुट चौड़ी ईंटों का इस्तेमाल किया गया है.

भीकाजी की बावड़ी

राजस्थान के अजमेर से लगभग 13 किमी की दूरी पर स्थित गगवाना में एक 400 वर्ष पुरानी बावड़ी मौजूद है, जिसे 'भिकाजी की बावड़ी' के नाम से जाना जाता है. बावड़ी में नीचे उतरने के लिए कई सीढ़ियां भी बनी हुई हैं. इस बावड़ी में कई प्राचीन शिलालेख मौजूद हैं, जिन पर उस समय की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया हुआ है. यहां मौजूद शिलालेखों में फारसी भाषा का इस्तेमाल किया गया है.

इस बावड़ी में पानी के तल तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है जो मुख्या प्रवेश से होते हुए नीचे तक जाती हैं इस बावड़ी में प्रवेश करते ही इसके मुख्या दरबाजे के ऊपर छतरी दार मेहराब बना हुआ है और ऐसा ही मेहराब इसके अंत वाली भवन के ऊपर बना हुआ है इस बावड़ी के चार नारों पर छतरिया बनी हुई हैं और बीच में एक मेहरा वाली में छतरी बनी हुई है जो इस बावड़ी को बहुत ही सुंदर बनाती है यह बावड़ी शिल्प कला का बहुत ही सुंदर उदाहरण है इस बावड़ी में पहुंच कर अद्भुत रोमांच का अनुभव होता है। Bhandarej ki Bawdi **भांडारेज बावड़ी** का निर्माण 1732 मैं हुआ था यह बावड़ी तीन मंजिला है और आयताकार शेप में है हर मंजिल पर कमरे बने हुए हैं यह कमरे संभवत कपड़े बदलने के लिए और प्रार्थना करने के लिए बने हुए है पुराने जमाने में इन्हे इस्तेमाल किए जाता होआ इस बावड़ी ऐ एक तरफ से दूसरी तरफ जाने के लिए गलीरी बने गई है ये इस बावड़ी की ख़ूबसूरती को और बढ़ाते है।यह इस बावड़ी के बारे में भी कहा जाता है कि इसका निर्माण भी एक रात में भूतों ने किया था किवदंती है कि एक बार एक बारात भांडारेज गांव में आई थी और वह इस बावड़ी में रुकी लेकिन जब वह बारात इस बावड़ी के अंदर बनी हुई सुरंग में गई तो वह वापस लौट कर नही इसीलिए इस बावड़ी की सुरंग को भूतिया भी कहा जाता है ये सुरंग बड़ी बावड़ी से आभानेरी गांव की चाँद बावड़ी तक जाती हैं।[10,11]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 3, March 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1003207

दूध बावडी आधार देवी मंदिर की तलहटी में स्थित है जो एक पवित्र कुआँ हैं और माउंट आबू के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है। इसका नाम दूध बावडी इसलिए पड़ा क्योंकि इस कुएं में जो पानी है उसका रंग दूध की तरह है। इस कुएं के पानी के रंग के साथ कई किवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं। एक ऐसी ही किवदंती के अनुसार यह कुआँ देवी देवताओं के लिए दूध का स्त्रोत है। स्थानीय निवासियों द्वारा इस पानी को पवित्र माना जाता है।उनका यह विश्वास है कि कुएं के पानी में कुछ जादुई शक्तियां हैं। अनेक भक्त इस कुएं को गायों की देवी कामधेनु का प्रतीक भी मानते हैं।

विचार – विमर्श

वाओरीस यानि बावड़ी ने भारत में मध्ययुगीन काल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसी कारण इसे महत्वपूर्ण सामाजिक ढ़ाचों के रूप में गिना जाता है। यह सीढ़ीदार कुआं 165 फीट गहरा है जो राजपूतों के शासनकाल में एक उल्लेखनीय स्थापत्य शैली को प्रदर्शित करता है। इस कुएं का प्रवेश द्वार काफी संकीर्ण है और इसमें लगे हुए स्तंभों पर पत्थर के हाथी भी ऊपर बने हुए हैं। सीढ़ी से नीचे जाने पर कुंआ काफी बड़ा और व्यापक है। पूरा कुंआ काफी अच्छी तरीके से खूबसूरती से की गई खुदाई से एस आकार ब्रेकेट के साथ सजाया गया है।

भारत में जल प्रबंधन की परंपरा को प्राचीन काल की सबसे अद्‌भुत तकनीक के रूप में देखा जा सकता है। पौराणिक ग्रंथों में भी जल संचित करने की सबसे उच्चतम विधियों का उल्लेख है। जैसे तालाब, बांध, नहर, झील और बावड़ियां। समय, काल, परिस्थितियों के अनुसार, इन तकनीकों का इस्तेमाल सदियों से हमारा समाज करते आ रहा है। 'नेटिव प्लानेट' के इस खास खंड में आज हम बात करेंगे, राजस्थान की खूबसूरत 'बावड़ियों' के बारे में, जिनकी सरंचना व वास्तुकला, किसी का भी मन मोह सकती हैं। हमारे साथ जानिए राजस्थान स्थित प्रसिद्ध बावड़ियों के बारे में, जो अब खूबसूरत पर्यटन स्थल बन चुकी हैं। राजस्थान का जयपुर अपने खूबसूरत महलों के साथ-साथ प्राचीन बावड़ियों के लिए भी जाना जाता है। जिन्हें देखने के लिए देश-दुनिया से पर्यटक आते हैं।[9,10]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 10, Issue 3, March 2021 ||

DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1003207

परिणाम

राजस्थान की शुष्क जलवायु में जल की कमी की समस्या के समाधान हेतु प्राचीन काल से ही जल संरक्षण की तकनीकें अपनाई जाती रही हैं। विभिन्न जिलों में बावड़ी, टांके, जोहड़ जैसी जल संरक्षण करने वाली संरचनाओं का पाया जाना इसका उदाहरण है। पहले समय में जल आपूर्ति के उद्देश्य से तकरीबन हर राज्य व कस्बों से बनाई गई यह बावड़ियां केवल जलउपयोग की चीज ही नही बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का एक अभिन्न अंग हुआ करती थीं। साथ ही, हिंदु धर्म में जल को देवता के रुप में पूजे जाने की वजह से भी इन बावड़ियों पर आकर महिलाएं पूजा-अर्चना किया करती थीं।[8,9]

निष्कर्ष

ये अलग बात है कि वर्तमान में सही संरक्षण के अभाव में ये बावड़ियां पूरी तरह सूख चुकी हैं। लेकिन, आज भी इनकी खूबसूरती व बेहतरीन आर्किटेक्चर(Architecture) और इनके पीछे छिपे इतिहास को समझने के लिये दूर-दूर से पर्यटकों(Tourists) की भीड़ लगी रहती है। इनके निर्माण में बनाई गई ढ़ेरों सीढ़ियों यानी स्टेपस् के कारण ये बावड़ियां 'स्टेपवेल्स' (Stepwells) भी कहलाती हैं और एक बेहतरीन टूरिस्ट प्लेस के रुप में जानी जाने लगी हैं। इस लेख के माध्यम से हम आपको घूमने की दृष्टि से बेहतरीन भारत की कुछ प्राचीन खूबसूरत बावड़ियों के बारे में बताने जा रहे हैं।[11,12]

संदर्भ

1. डेविस, फिलिप (1989). The Penguin guide to the monuments of India. लंदन: विकिंग (Viking). आईएसबीएन 0-14-008425-8.
2. ↑ "फोटो: चाँद बावड़ी स्टेपवेल, राजस्थान।". बीबीसी. 2010. मूल से 29 अप्रैल 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 27 जून 2013.
3. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 8 अगस्त 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 जून 2014.
4. ↑ शर्मा डॉ॰ गोपीनाथ शर्मा: राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत, 1983, पृ. 115
5. Basham, A.L. 1967. 'The Wonder that Was India', Fontana, London, and Rupa & Co., Calcutta.
6. 'राजस्थान की रजत बूँदें' : अनुपम मिश्र : गाँधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली का प्रकाशन
7. 'आज भी खरे हैं तालाब': अनुपम मिश्र : उपर्युक्त
8. 'राजस्थान के कुएँ एवं बावड़ियाँ': वाई.डी. सिंह :राजस्थानी ग्रंथागार: जोधपुर
9. 'भारतीय बावड़ियाँ पारंपरिक जलस्रोतों का ऐतिहासिक, सामाजिक एवं शिल्पशास्त्रीय अध्ययन':[Subhadra Publishers and Distributors:2013 [ISBN 8189399640] [ISBN 9788189399641]
10. किशनगढ़ की जर्जर बावड़ियाँ
11. ग्वालियर की बावड़ियाँ
12. मारवाड़ क्षेत्र की बावड़ियाँ

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor:
7.512

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com